हिंदी पत्रिका

सुबह

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिकांक

अप्रैल– सितंबर 2025

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री उदय शंकर प्रसाद
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता

परामर्शदाता

श्री कौशिक दास
उपनिदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री रमेश झा
सहायक निदेशक

सदस्यगण

सुश्री कुसुम चौधरी
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री नन्दनी साव
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री मनीषा साव
लेखापरीक्षक

श्री अंकित कुमार सिंह
लेखापरीक्षक

स्वत्वाधिकार

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता

प्रकाशन

सुबह

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

अंक

अर्धवार्षिकांक

अप्रैल– सितंबर 2025

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय,कोलकाता
गवर्नमेंट ऑफ इंडिया प्रेस बिल्डिंग (ईस्ट विंग), प्रथम तल
8, किरण शंकर रॉय रोड, कोलकाता–700001

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
कोलकाता का कार्यालय

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

अपनी हिंदी ज्ञान को पोषित करने, अपने भीतर से निकलने वाली उद्गार को जागरुकता के साथ व्यक्त करने के लिए हिंदी पत्रिका 'सुबह' एक सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में हिंदी के प्रति मान–सम्मान के वातावरण का सृजन करने में हम और अधिक सफल होंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिंदी पत्रिका सुबह का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भाँति कार्मिकों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में और इसके प्रति अभिरुचि का परिवेश बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उदय शंकर प्रसाद)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),

कोलकाता का कार्यालय

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने आपको सर्वाधिक व्यक्त करता है। भाषा का प्रयोग एक कला है। हमारी उर्जा सहित सभी तरह की ऊर्जा को व्यक्त करना एक विज्ञान है। इस सकारात्मक ऊर्जा का प्रयोग कर जब हम भाषा के माध्यम से रचनाओं को फलक पर उतारते हैं तो इस कला और विज्ञान के मेल से हमारी दक्षता का उन्नयन होता है। हिंदी पत्रिका 'सुबह' कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा के विकास में अपने सकारात्मक लेखन से योगदान देने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस सृजनशीलता से राजभाषा के प्रति अपनत्व का भाव प्रगाढ़ होगा और इसी भाव से कार्यालय में राजभाषा का सहज प्रवाह बना रहेगा।

प्रस्तुत पत्रिका 'सुबह' राजभाषा के विकास के लिए एक ठोस प्रयास का प्रतीक बने और इसमें उत्तरोत्तर प्रगति हो यही हमारी कामना है। आप सभी को पत्रिका प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

(कौशिक दास)

उप निदेशक

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों.......

हमारे भीतर से जो शक्ति निकलती है, वही जीवन है। जहाँ हम ध्यान केंद्रित करते हैं, वही से हमारी जीवन की शक्ति निकलती है। प्रत्येक क्षण हमें अवसर मिलता है कि हम अपना ध्यान उन विचारों पर लगाएँ, जिनसे हमें प्रेरणा मिलती है। कार्यालय में हमारे लिए प्रत्येक दिन एक नई शुरुआत होती है। हम इन अवसर को जीवन की शक्ति का उपयोग करके राजभाषा के विकास में लगा सकते हैं। महाकवि विद्यापति ने कहा– 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'। अर्थात् देशी बोली सबको मीठी लगती है। हिंदी हमारी देशी भाषा है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए आज बहुत सारे टूल्स उपलब्ध है। इन टूल्स ने कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग आसान बना दिया है। हम तकनीकों को सीखकर राजभाषा के प्रयोग में नये प्रतिमान स्थापित कर सकते हैं।

हिंदी भाषा की सेवा में हिंदी पत्रिका 'सुबह' का अगला अंक समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। सभी रचनाकारों के सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएं ताकि प्रकाशन को सुंदर और बेहतर बनाया जा सके।

रमेश झा

(रमेश झा)

संपादक

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	शतरंज की बढ़ती लोकप्रियता	विक्रमादित्य	8
2.	चुप चाप खोता बचपन	दीपक राज	9
3.	एक तराना बदलाव का	श्रेया सिंह	10
4.	सुस्वादु "आलू"	निमिषा सिंह	11
5.	बिहार	राज कुमार	12
6.	खो गये हम कहाँ	सिद्धार्थ मौर्य	13
7.	थोड़ा–थोड़ा पुरुष	निमिषा सिंह	15
8.	अंतर्मुखी	मनीषा साव	17
9.	राजभाषा हिंदी	नन्दनी साव	18
10.	जीवन के पल	अंकित कुमार सिंह	19
11.	बेटी	कुसुम चौधरी	20
12.	प्रकृति का जादू	दीपान्विता राय	21
13.	कोलकाता: एक शहर जो अपनी आत्मा का ऑडिट करता है	शुभ्र रॉय चौधरी	22
14.	मन के हारे हार है, मन के जीते जीत	नन्दनी साव	26
15.	गांधी: अनेक तथ्यों के	मनीषा साव	27
16.	कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ	श्रेया सिंह	29
17.	रामबोला से मानस का हंस तक का सफर	रमेश झा	31
18.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	नन्दनी साव	36
19.	जलवायु परिवर्तन और युवा पीढ़ी की भूमिका –धरती के कल की कहानी	विक्रमादित्य	39
20.	बुरे सोच का बुरा नतीजा	पीजूष कान्ति नस्कर	41

शतरंज की बढ़ती लोकप्रियता

विक्रमादित्य
लेखापरीक्षक

64 खानों की बिछी है बिसात,
खेला जाता रहा भारत में सालों–साल।
`चतुरंगा` नाम से थी कभी ख्याति,
आज 'शतरंज' से है पहचान पाती।

32 मोहरों की जीवन का है सवाल,
सह और मात की बुनते हैं जाल।
घोड़े की ढाई, ऊँट की तिरछी चाल,
बड़े–बड़े रणनीतिकारों को भी डाले जंजाल।

राजा की रक्षा में पूरी सेना खड़ी,
हर चाल में छिपी है एक नयी कड़ी।
बिसात पर नहीं कोई छोटा या बड़ा,
हर मोहरा रखता है अपना मायना अलग सा।

विश्वविजेता बन आनंद ने बढ़ाया सम्मान,
दिया हिन्द की कुशलता का प्रमाण।
अब प्रज्ञ, गुकेश और अर्जुन ने थामी कमान,
नई पीढ़ी में फिर जगा है वह स्वर्णिम अभिमान।

महिलाओं ने भी दिखाया अपना दम
हारी बाजी को भी जीतने में है सक्षम
दिव्या वैशाली हम्पी को आंके न कम
विश्व पटल पर लहराया भारत का परचम

उत्साह है, उद्घोष है नए युग की
भारतीय शतरंज की नयी गाथा लिखी जा रही।
जहाँ हर खिलाड़ी में है सीखने की ललक,
हर दांव में छुपी है भविष्य की झलक।

नये गुर सीखें, नयी सोच लाई,
पुरानी परंपराएँ फिर से मुस्काई।
बुद्धि, धैर्य और साहस का मेल,
असीम संभावनाओं का है ये खेल।

तो बजाओ जयघोष, ये समय है महान,
जब भारत फिर बन रहा है शतरंज का शान।
हर चाल, हर जीत, हर पल में यही बात
बिसात पर चमकता है अब भारत का नाम।

<u>चुप चाप खोता बचपन</u>

दीपक राज
लेखापरीक्षक

एक नन्हा सा चेहरा, आँखों में नूर,
अब टिक–टिक करता मोबाइल भरपूर।
न मिट्टी में खेला, न पेड़ के तले,
अब कहानियाँ बस स्क्रीन पे चले।

जहाँ पहले हँसी थी, अब स्क्रॉलिंग का शोर,
हर पल में खोते हैं सपनों के दौर।
नींद अधूरी, बातें अधूरी,
आंखों से नहीं, अब दिल से दूरी।

माँ बुलाए — " आ बैठे कुछ पल साथ,
वो कहे — "बस एक ही वीडियो की है बात।"
पापा पूछें — " आ चल मैदान चलें",
वो बोले — " पहले गेम का लेवल बदल लें।"

चुपचाप बैठा है, फिर भी है हलचल,
मन डूबता जा रहा, बस ग्राफिक्स का दलदल।
खेल नहीं, खिलौने नहीं, बस टच और टैप,
बचपन उलझा है, कैसा है ये डिजिटल ट्रैप !!

आओ फिर से वो दौर लौटाएं,
जहाँ कहानियों में परियां मुस्काएं।
जहाँ गिरकर भी हँसी आ जाए,
न कि स्क्रीन से ही दुनिया सजाए।

छोटे से दिल में बड़े ख्वाब है पलते,
जो स्क्रीन की 'ब्राइटनेस' में है जलते।
स्क्रीन नहीं, साथ हमारा चाहिए,
बचपन को फिर से बचपन चाहिए।

एक तराना बदलाव का

श्रेया सिंह

लेखापरीक्षक

अब नहीं रहा सच्चाई का जमाना
बदल गया है मूल्य मापने का पैमाना |
हर किसी का एक ही सपना –
धन कमाना, बस धन कमाना |
भूखा है गरीब, नहीं मिलता भरपेट खाना,
और अमीरों के खर्चों का नहीं कोई ठिकाना |

जारी है घोटालों का बहाना
सत्य बोलो तो देना पड़ता है हर्जाना |
चुनावों से पहले दिखाते है मीठे सपने,
वादों से जनता को बहलाते हैं अपने |
जीत के बाद सब कुछ भूल जाना
आम हो गया है अब जनता को मूर्ख बनाना |

दहशत का देश में बनता जा रहा है कारख़ाना
आसान नहीं है अब इनसे छुटकारा पाना |
रोकना ही होगा उच्चवर्गियों का असहायों को तड़पाना
सदियों से चल रहा है इनका सताया जाना |
वक्त की माँग है समाज में बदलाव लाना
सच्चाई, सद्भाव एंव प्रेम को अपनाना |

हर देशवासी को एक होकर, गाना है बस ये तराना
'मानवता हो मुल्क का असली ख़जाना' |

सुस्वादु "आलू"

निमिषा सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या कहा शेर, चीता, बंदर, हाथी ?
सबसे प्यारा तो होता है भालू।
क्या कहा, केला, करेला, पपीता?
सबसे सुस्वादु तो होता है आलू।
धरती के अंधेरे में बनता है, सजता है,
पर डंका स्वाद का जग में बजता है।
हर सब्जी का सगा, बच्चों का दुलारा,
श्रीमान आलू कचालू हैं मां का सहारा।
विनम्रता का पाठ पढ़ाते सब्जीराज आलू
नतमस्तक हैं लौकी, तोरी, भिंडी श्रद्धालु ।
सेहत की कसमें नहीं खाते पर,
पोटैशियम, विटामिन, फाइबर से भरे भरे,
मात खा जाएं, सेहत वाले पत्ते हरे हरे।
देसी है फ्रिज के चोंचले भी नहीं
अमीर–गरीब सबकी रसोई सही
कीमतों में भी महाशय रहते है दयालु
सबसे सुस्वादु तो होता है आलू।

बिहार

राज कुमार
लेखापरीक्षक

मैंने जन्म लिया उस धरती पर
जहां बुद्ध को ज्ञान मिला
जहां महावीर को निर्वाण मिला
जहां से भारत को अशोक महान मिला
मैंने जन्म लिया उस धरती पर
जहां शून्य का आविष्कार हुआ
जहां सिकंदर का भी हार हुआ
जहां विश्व प्रसिद्ध नालंदा से
शिक्षा का प्रसार हुआ।

मैंने जन्म लिया उस धरती पर
जहां वृद्ध वीर कुँवर की तलवार उठी
जहां सत्याग्रह की शुरुआत हुई
जहां सम्पूर्ण क्रान्ति की धारा में
सिंहासन की भी हार हुई
हाँ, मैंने जन्म लिया उस धरती पर,
जहां के स्वर्णिम इतिहास में हुए अनेक महान
बिहार की इस पावन भूमि को
मेरा कोटि–कोटि प्रणाम।

खो गये हम कहाँ

सिद्धार्थ मौर्य

लेखापरीक्षक

कमाने आया इस नये शहर में

मुस्कुराहटों से समझौता कर के,

सब मतलब के इस उम्र में

अब स्कूल वाले दोस्त नहीं बनते,

सब बदला– शौक़ के द्वार, नदी–पर्वत–पहाड़

पर, बदले तो बस जीने के बचे कुछ साल,

ख़ुशी यहाँ भीड़ में घूरती

जैसे हो पूछती– तुम्हारा यहाँ काम क्या?

और ये जो है "कफ़न में लिपटी ज़िंदगी"

अकेलेपन की बाहों में ऐसी दुबकी पड़ी है

कि कभी लगती जो ख़्वाहिश सी थी

आज अभिशाप लगने लगी है।

दीवारों ने भी अब सुनना छोड़ दिया,

कुछ अलग कहने को उन्हें

अल्फ़ाज़ नई नहीं बाकी है,

अलग मुझमें अगर कुछ था

बातें वो बताने को बची बरसों पुरानी है,

हाथों की लकीरें, नसीब की खुशनसीबी

और थाल में मम्मी के हिस्से की रोटियाँ

एक ज़माने से ऐसी अधूरी पड़ी है

कि अच्छी बातें

अब उम्मीदों सी झूठी लगने लगी है।

दीवाली के दीये, रविवार की रोटियाँ

और "पॉच मई" की मोमबत्तियाँ

अब शहर के "मकान" में ही हैं जलते,

पापा के जूते पैरों में आ जाने से

मन में दो "मैं" में रणभूमि सी शोर मची है

और मनोभूमि जो है ऐसी सुनी पड़ी है

कि "घर" की खिड़कियाँ बंद, दरवाजे तंग

और दीवारें जो कभी

कंधे से कंधा मिला कर साथ खड़ी थी

अब और ऊँची, और दूर लगने लगी है।

बीवी की कलाइयों में माँ के कंगन ढूँढता,

बेटे की किलकारियों में ढूँढता अपना बचपन,

और ढूँढता हूँ

माँ–बाबा–दीदी–भाई को सॅजोया वो दर्पण

जो खो गये हैं इस "नये घर" में कहीं,

ज़िंदगी में आगे बढ़ने

बस आगे बढ़ते ही रहने की कीमत

ऐ ज़िन्दगी, कुछ ऐसी चुकानी पड़ी है

कि मम्मी–पापा–दीदी–भाई वाली वो "पुरानी छत"

आज नये–नये मकानों में दफ़न लगने लगी है।

थोड़ा–थोड़ा पुरुष

निमिषा सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

इठलाती थी, मुस्काती थी,
दुनिया को बहुत सुंदर बताती थी।
अब तो बात–बात पर तन जाती है,
मजबूर होकर वह स्त्री थोड़ा–थोड़ा पुरुष बन जाती है!

कमज़ोर नहीं थी, कोमल थी,
भिन्न प्रकार से सबल थी।
तारीफें सुनने को मचलती थी,
प्रेम की तृष्णा भी प्रबल थी।
तुम्हारी उपेक्षा से, जग की अपेक्षा से
अब तो उसकी ठन जाती है,
मजबूर होकर वह स्त्री थोड़ा–थोड़ा पुरुष बन जाती है!

तितली में बस रंग नहीं, जीवन की क्षमता है,
भूमिकाएं हों भिन्न सही, अधिकारों की समता है।
फिर भी अब जब ललकारा तुमने,
वह विकराल काली सा रूप धर
जीतने को रण आती है
मजबूर होकर वह स्त्री थोड़ा–थोड़ा पुरुष बन जाती है!

काजल, बिंदिया हृदय में बसते थे,

भाती पायल और चूड़ियां थीं।

पर सहम गई जब जाना

वो तो हाथों की बेड़ियां थीं।

जब जान गई, हर बंधन से मुक्त हुई,

भारी मन से, पर निर्भरता से निर्मुक्त हुई।

अब श्रृंगार रहित देखो, बस शक्ति पहन आती है,

बहुत मजबूर होकर वह स्त्री थोड़ा–थोड़ा पुरुष बन जाती है !

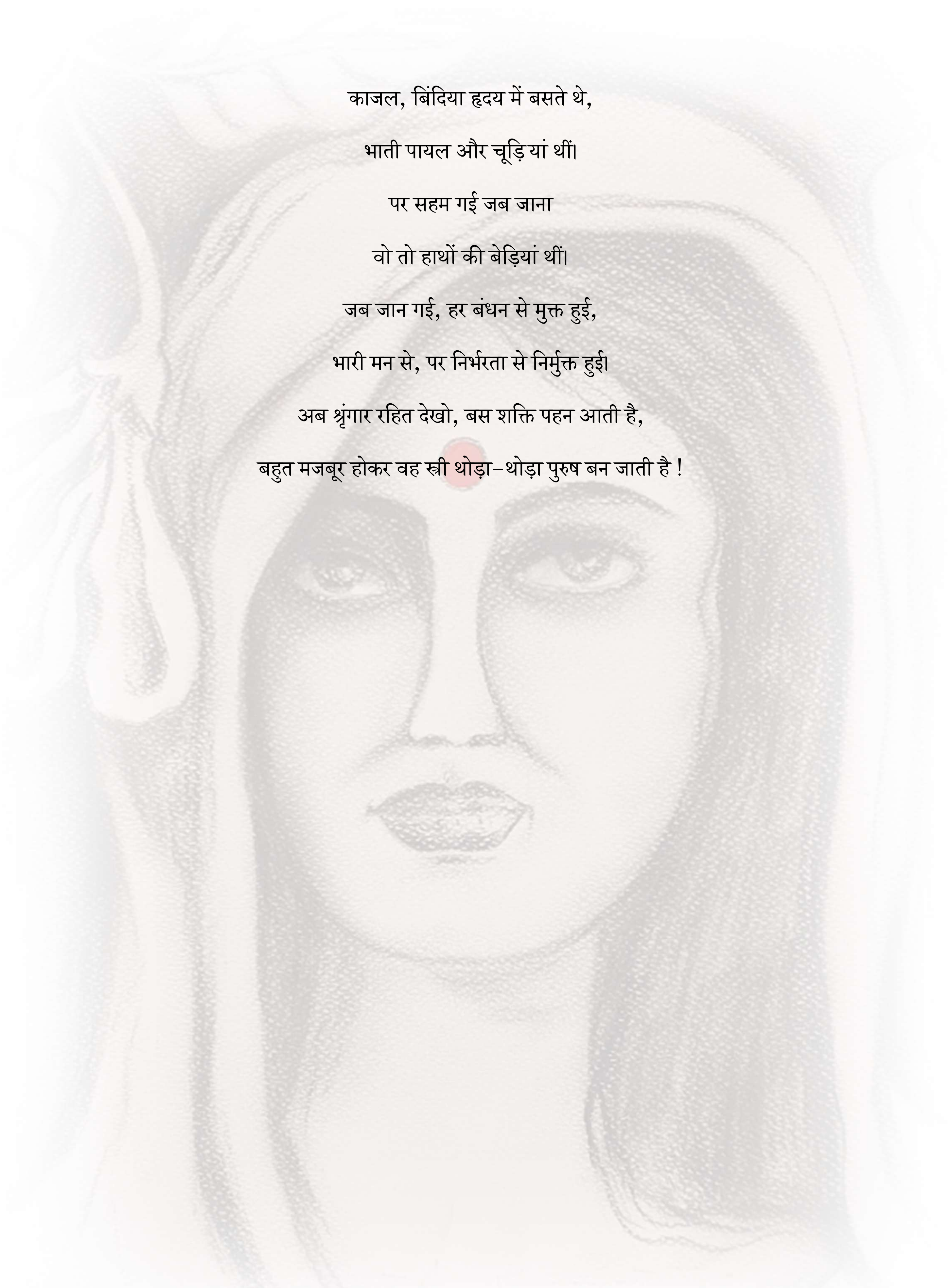

अंतर्मुखी

मनीषा साव

लेखापरीक्षक

हां ! मै अंतर्मुखी हूँ।

थोड़ा कम बोलती हूं, पर समझती बहुत हूँ।

खुद में रहना अच्छा लगता है, पर खुदगर्ज नहीं हूँ।

गलती से गलती हो जाए और दिल दुख जाए किसी का,

उससे ज्यादा दुःखी खुद हो जाया करती हूँ।

हां! मै अंतर्मुखी हूँ।

अकेलापन मानों मेरे हर सवाल का जवाब हो।

लोगो की भीड़ में असहज हो जाती हूं, पर कभी कभी बोलना भी चाहती हूँ।

कहती कुछ नहीं पर यक़ीन मानिए बोलती बंद कर सकती हूँ।

हां! मै अंतर्मुखी हूँ।

दोस्त कम ही रखे है मैने, किताबो से यारी है।

दोस्त मेरे कहते है मुझसे, बोलती क्यों नहीं हो तुम।

कहती नहीं कुछ कभी, बस थोड़ा मुस्कुरा देती हूँ।

हां! मै अंतर्मुखी हूँ।

अकेले रहना पसंद है मुझे, यह खुद चुना है मैने।

उम्मीदें नहीं है मुझे किसी से भी, खुद पे भरोसा ही इतना किया है।

उम्मीदो का टूटना और बिखरकर के रोना दोनों खूब देखे है मैने।

हां! मै अंतर्मुखी हूँ।

बुरी नहीं हूं मै, दिल साफ है मेरा।

अलग रहना अच्छा लगता है मुझे।

लोगो से मेलजोल कम, मगर अहसास दोस्ती का सच्चा है मेरा।

हां! मै अंतर्मुखी हूँ।

हां! मै अंतर्मुखी हूँ।

राजभाषा हिंदी

नन्दनी साव
कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी में बिंदी उसकी शान हैं,

भारत की वही मान हैं,

जब राजभाषा की बात चली,

सभी दिग्गजों की अपनी राय चली,

सभी ने अपने मातृभाषा को राजभाषा बनाने का विचार दिया,

पूरे भारतवर्ष में अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ थी,

चूंकि हिंदी जन–जन की भाषा थी,

सरलता एवं अखंडता का द्योतक थी,

इसलिए संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला,

आइए हम संकल्प करें,

राजभाषा के मान को बढ़ाएँगे,

इनको जन–जन तक पहुंचाएंगे,

राजभाषा को राष्ट्रभाषा बनाएँगे।

जीवन के पल

अंकित कुमार सिंह
लेखापरीक्षक

ऐसा क्या है
जटिल परिस्थितियों में भी
बाँधे रखता हमें,
ऐसा क्या है
कुछ ठीक ना लगने पर भी
आगे बढ़ने का हौसला देता हमें,
जीवन के उतार–चढ़ाव में
सबके लिए
भिन्न हो सकती हैं
इन चीज़ों की परिभाषा..
जैसे मेरे लिए सुखद होती–
"एक कड़क चाय
एक अच्छी सी किताब
बादलों का अचानक से घिर आना
या हल्की–हल्की सी बरसात,
भाई–बहनों के संग तकरार
या चिड़ियों की एक लंबी कतार,
अप्रत्याशित किसी फूल का खिल जाना
किसी पुराने मित्र से लंबी वार्तालाप
बच्चों का खेल कर घर लौटना
सुनना कभी उनकी प्यारी प्यारी
ऊलजलूल सी बात,
कभी मन का मौन हो जाना
कभी–कभी अभिव्यक्ति का बुखार
मां का मेरे सिर में तेल लगाना
या नन्हे बच्चे के चेहरे पर खिलती मुस्कान
शांत नदी, उड़ते पक्षी
कोयल की मीठी पुकार
ईमली का पेड़, आम का आचार
गांव की छत
किसी अपने का खत
खेतों में इठलाते सरसों
कागज की नाव, पीपल की छांव
या भरी दुपहरिया में
काला खट्टा का चाव"
अनगिनत सी यादें हैं
है बेहिसाब से चाह
मिलता रहे गम या ख़ुशी
हम हँस कर सहेंगे सारे घाव
सुकून के इन पलों को
मत करो ऐसे बर्बाद,
खुशियां है बटोर लो
जीवन को खुल कर जीए जाओ
कल हम कहाँ तुम कहाँ
कोई नहीं देता है किसी को भाव
इसलिए अपनी उपस्थिति
स्वयं के लिए दर्ज कराओ।

बेटी

कुसुम चौधरी
वरिष्ठ अनुवादक

नन्हे क़दमों से आई घर में,
संग लाई खुशियों की किरण,
बोलों में उसके मिठास भरी है,
जैसे हो कोई मीठा मधुबन।

आँखों में सपनों का सागर,
मन में चाँद सितारे हैं,
हर दुख को सह ले हँसकर,
बेटी तो सबसे प्यारी है।

कभी गुड़िया, कभी सहेली,
कभी माँ की परछाई है,
हर रिश्ते को निभाए जैसे,
वो खुद ही एक रचना रचाई है।

कभी पढ़ने में आगे बढ़े,
कभी खेलों में चमके जैसे तारे,
संघर्षों से हार न माने,
सपनों को जीने की करे तैयारी।

उसे कम न आँको दुनिया वालों,
वो तो खुद में एक मिसाल है,
बेटी है तो जीवन है,
बेटी नहीं तो सब बेहाल है।

चलो करें एक वादा आज,
उसे भी उड़ने देंगे हम,
न काटेंगे उसके पर कभी,
सपनों को सच करने देंगे हम।

प्रकृति का जादू

दीपान्विता राय
लेखापरीक्षक

जिन्दगी जब रूठ जाए तुमसे

कभी निराश मत होना,

क्योंकि हर रात के बाद दिन को आना है,

तब तक खुद को है संभालना,

सुख के दिन दोस्त मिलते हैं बहुत,

दुख के दिन कोई साथ नहीं

खुद का मसीहा तुम खुद ही बनो

उससे बढ़कर कोई दोस्त नहीं,

सागर की लहरें, आसमान का नीला रंग

है पास मगर बहुत दूर

पाने और खोने से बनता है

जीवन संगीत का नया सुर,

पहाड़ की ऊँचाई, नदी की गहराई

खेतों में हरियाली की चादर

प्रकृति ने सजाया अद्भुत मेला।

कोलकाता: एक शहर जो अपनी आत्मा का ऑडिट करता है

शुभ्र रॉय चौधरी
लेखापरीक्षक

कोलकाता की विविधता– एक विरासत भवन, एक नवनिर्मित संरचना, प्रतिष्ठित पीली टैक्सी, मध्यम वर्ग की कार, अमीरों की कार, बाइक पर पूरा परिवार अपने कार्यस्थल तक पहुंचने के लिए सड़क पार करने का इंतजार कर रहे , पैदल चल रहे लोग, शहर के यातायात का प्रबंधन करने वाला एक ऑन ड्यूटी पुलिसकर्मी,एक नए युग का ट्रैफिक पोल, बस उसके बगल में एक औपनिवेशिक प्रकाश स्टैंड। सभी सह–अस्तित्व में हैं। हर चीज की अपनी जगह होती है और हर किसी का अपना दृष्टिकोण है कि वे उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करें जो वे चाहते हैं।

कोलकाता : एक शहर जो अपनी आत्मा का ऑडिट करता है

हर शहर की एक चाल होती है। दिल्ली तेज़ कदमों से चलती है। मुंबई दौड़ती है। बेंगलुरु कोड करता है। पर कोलकाता… कोलकाता ठहरता है, सोचता है, याद करता है और जब भी उसे मौका मिलता है, वह खुद को परखता है – जैसे कोई ईमानदार लेखापरीक्षक अपनी ही किताबों की जांच करता है।

मैं एक सरकारी लेखापरीक्षा विभाग का कर्मचारी हूँ। मेरी ज़िंदगी फाइलों, आंकड़ों और रिपोर्टों से घिरी रहती है। हम सीखते हैं कि कैसे किसी दस्तावेज़ की सतह के नीचे जाकर सच्चाई खोजी जाती है। जब यही नजर लेकर मैं अपने शहर को देखता हूँ, तो कोलकाता एक जीवित रिपोर्ट की तरह सामने आता है – संवेदनशील, आत्मविश्लेषी, और कभी–कभी बेहद भावुक।

जहाँ विरासत सवाल करती है

कोलकाता एक ऐसा शहर है जो भूलता नहीं। उत्तरी कोलकाता की पतली गलियों में चलिए – जहाँ पुराने, जर्जर भवन अब भी अपने इतिहास को ढो रहे हैं। आप पाएंगे कि यहाँ समय आगे नहीं बढ़ता, वह बार–बार पीछे मुड़ता है।

यह शहर अपने अतीत को मिटाता नहीं, वह उसे संग्रह करता है।

ट्राम की घिसी पटरियों से लेकर कॉलेज स्ट्रीट की किताबों की खुशबू तक, हर चीज़ अपने पीछे एक हिसाब छोड़ती है। यह शहर अपने लेज़र नहीं फाड़ता, वह उनके नीचे टिप्पणियाँ जोड़ता है।

जहाँ अन्य शहर खुद को बार–बार नया रूप देते हैं, वहीं कोलकाता खुद को याद करता है। यही उसकी सबसे बड़ी ताकत है, साथ ही सबसे बड़ी चुनौती भी। क्योंकि जो शहर सब कुछ याद रखता है, उसे अपने हर दर्द, हर गलती और हर सपना भी अपने साथ रखना पड़ता है।

अड्डा: विचारों की खुली ऑडिट

हर मोहल्ले में, हर चाय की दुकान पर, और हर कॉलेज कैंटीन में कोलकाता का सबसे जीवंत ऑडिट सिस्टम चलता है – अड्डा। यह सिर्फ बातों का सिलसिला नहीं होता। यह विचारों की समीक्षा, संस्कृति का लेखा–जोखा, भावनाओं का विश्लेषण और राजनीति का मूल्यांकन होता है।

यहाँ लोग बातों में समय नहीं गंवाते – वे बातों से समाज को जांचते हैं।

अड्डा ही वह आदत है जिसने इस शहर को टैगोर, नेताजी, सत्यजीत रे, अमर्त्य सेन जैसे व्यक्तित्व दिए। अड्डा में हर विषय पर बहस होती है— क्रांति से लेकर क्रिकेट तक, कविता से लेकर बजट तक। यह शहर सवाल पूछने से डरता नहीं, बल्कि सवालों के सहारे जीता है।

कला: आत्मा की लेखापरीक्षा

कोलकाता में कला मनोरंजन नहीं है— यह अंतरात्मा की जांच है।

सत्यजीत रे की फिल्में सजा नहीं देती, लेकिन वे आपकी अंतरात्मा को अदालत में खड़ा कर देती है। टैगोर की कविताएँ सज़ावट नहीं, बल्कि मनुष्य की आत्मा की रिपोर्ट होती हैं। हर नाटक, हर चित्र, हर कविता एक गवाही है कि इस शहर ने अपने समय, समाज और संवेदना को देखा, समझा, और परखा है।

यहाँ की कला एक दस्तावेज़ है – एक रिपोर्ट जो बताती है कि हम कहाँ सही थे और कहाँ नहीं।

बाबू, मजदूर और संतुलन–पत्र

कोलकाता को अक्सर 'बाबू' शहर कहा जाता है। सरकारी फाइलों में डूबा हुआ, धीमा और पुराना। पर इस छवि के पीछे एक सच्चाई छुपी है। यह शहर व्यवस्थाओं का संरक्षक है। यहाँ सरकारी इमारतें केवल दीवारें नहीं हैं, वे सैकड़ों निर्णयों, नोटिंग्स और नीतियों की गवाही देती हैं।

मैं जब अपनी नौकरी के दौरान ऑडिट रिपोर्ट बनाता हूं, तो मैं सिर्फ आंकड़ों को नहीं देखता, मैं यह सोचता हूं कि इन आंकड़ों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यही नजरिया इस शहर ने मुझे दिया है।

यहाँ का हर 'बाबू' समाज के उस ढांचे का हिस्सा है, जो व्यवस्था को जीवित रखता है। कोलकाता में ऑडिट सिर्फ फाइनेंस का नहीं होता, यहाँ ज़िंदगी का भी ऑडिट होता है।

पंडाल और पब्लिक ऑडिट

कोलकाता की दुर्गा पूजा दुनिया भर में प्रसिद्ध है, पर अगर आप सतह से नीचे देखें, तो यह एक जटिल ऑडिट रिपोर्ट की तरह है— बजट, चंदा, खर्च, सामाजिक भागीदारी और सांस्कृतिक मूल्यांकन— सब कुछ इसमें शामिल है।

हर पंडाल एक रिपोर्ट है – रचनात्मकता का, समुदाय का और जिम्मेदारी का।

यहाँ लोग केवल प्रतिमा की ऊँचाई नहीं पूछते, वे यह भी पूछते हैं कि खर्च कितना हुआ, दान कहाँ गया, और क्या जरूरतमंदों को कुछ मिला। कोलकाता में त्योहार केवल उत्सव नहीं होते – वे सामुदायिक ज़िम्मेदारी का दस्तावेज़ होते हैं।

एक ऐसा शहर जो अपनी खुशी से भी सवाल करता है

कोलकाता का सबसे अनोखा गुण यह है कि यह कभी अंधी खुशी में नहीं डूबता। यह हमेशा खुद से पूछता है – क्या यह खुशी सबकी है? इसकी कीमत क्या है? क्या किसी को पीछे तो नहीं छोड़ दिया गया?

यह आलोचना नहीं है। यह जागरूकता है।

यह शहर किसी वृद्ध दादा की तरह है जो बहुत कम बोलता है, पर जब बोलता है तो सीधा सवाल

करता है – "क्या तुमने अपने फैसलों का हिसाब रखा है?"

मेरी अपनी ऑडिट रिपोर्ट

मैंने कोलकाता में पढ़ाई की, खेला, प्रतियोगिताएं जीतीं और अब सरकारी सेवा में हूँ। यह शहर मेरे जीवन का बहीखाता है। मेरी पेशेवर ईमानदारी, मेरी संवेदनशीलता और मेरी आत्म–अवलोकन की शक्ति, सब इसी शहर से उपजी हैं।

यहाँ हर गली, हर इमारत, हर चेहरा एक दर्पण है, जो आपको खुद से सवाल करने पर मजबूर करता है और शायद इसलिए जब मैं एक ऑडिट रिपोर्ट लिखता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं केवल सरकार को नहीं बल्कि समाज और आत्मा को भी जवाब दे रहा हूँ।

एक शहर जो खुद से आँख नहीं चुराता

कोलकाता कभी अपने दर्द को छुपाता नहीं। यह उसे मंच पर लाता है, कविता में उतारता है और अड्डा में बहस का मुद्दा बनाता है।

जब शहर खुद से आंख मिला सके, तभी वह सच्चा हो सकता है। कोलकात – वह शहर है जो हर सुबह खुद को आईने में देखता है। शायद इसलिए यहाँ की गलियाँ बूढ़ी हैं, पर झूठी नहीं।

यह शहर तड़क–भड़क में विश्वास नहीं करता। यह आत्मा की गहराई में जाकर सच्चाई खोजता है।

कोलकाता का अनंत संतुलन–पत्र

कोलकाता कोई सामान्य शहर नहीं है। यह एक जीवित मूल्य प्रणाली है। यह शहर सिर्फ आगे नहीं बढ़ता बल्कि सोचते हुए आगे बढ़ता है। यह सिर्फ खर्च नहीं करता, यह हर खर्च का मूल्य आंकता है।

यह शहर जीवित गवाही है उस बात की कि आत्म–निरीक्षण और आत्मा का ऑडिट ही किसी समाज को महान बनाता है।

यही कारण है कि कोलकाता सिर्फ एक शहर नहीं है – यह एक आदर्श है।

अंत में, मैं बस यही कहूंगा – "जब मैं कोलकाता की गलियों में चलता हूँ, तो मुझे लगता है कि यह शहर हर कदम पर मुझसे पूछ रहा है – 'क्या तुमने खुद को ठीक से परखा है?'

और यही सवाल, शायद, इस शहर की सबसे खूबसूरत बात है।"

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

नन्दनी साव
कनिष्ठ अनुवादक

एक राजा युद्ध में हार गया तो शत्रु सैनिकों से बचने के लिए एक गुफा में छिप गया, सैनिकों ने पत्थरों से बंद गुफा कर दी थी जो लोग सफलता पाना चाहते हैं, उन्हें अंतिम पल तक हिम्मत नहीं हारना चाहिए। जिस पल हम हार मान लेते हैं, उसी समय हम असफल हो जाते हैं। ये बात एक लोक कथा से समझ सकते हैं।

कथा के अनुसार पुराने समय में एक राजा युद्ध में हार गया था। उसके सभी सैनिक मारे जा चुके थे। राजा किसी तरह अपनी जान बचाकर जंगल में भाग गया। सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। वह बचने के लिए एक गुफा में छिप गया।

सैनिक राजा को जंगल में खोजते–खोजते उस गुफा तक पहुंच गए। गुफा के अंदर राजा को ढूंढा, लेकिन सैनिक उसे ढूंढ नहीं सके। बाहर आकर सैनिकों ने बड़े–बड़े पत्थरों से गुफा को बंद कर दिया। गुफा बहुत गहरी थी। अंदर की ओर राजा छिपा हुआ था। वह काफी थक चुका था। भूख–प्यास की वजह से बेहाल हो रहा था। उसके शरीर में ताकत भी नहीं बची थी।

शत्रु सैनिक गुफा बंद करके वहां से चले गए तो राजा अंदर बैठा–बैठा सोच रहा था कि अब तो उसका जीवन खत्म हो गया। वह गुफा से कभी बाहर नहीं निकल पाएगा।

राजा निराश हो चुका था। तभी उसे मां की एक बात याद आई। उसकी मां कहती थी कि कुछ तो कर, यूं ही मत मर। ये बात याद आते ही राजा में फिर से ऊर्जा आ गई। उसने सोचा कि कोशिश किए बिना हार नहीं मानना चाहिए।

राजा गुफा के द्वार से पत्थरों को हटाने का काम शुरू कर दिया। कड़ी मेहनत के बाद राजा ने बड़े–बड़े पत्थर खिसका दिए। किसी तरह राजा ने बाहर निकलने की थोड़ी सी जगह बना ली थी। राजा गुफा से बाहर निकला और अपने मित्र राजा के पास पहुंच गया। मित्र राजाओं की मदद से उसने शत्रुओं को पराजित कर दिया और अपना राज्य वापस प्राप्त कर लिया।

सीख

इस कथा की सीख यही है कि हमें सफलता मिलने तक हार नहीं मानना चाहिए। जिस पल हम हार मान लेते हैं, उसी समय असफल हो जाते हैं।

कबीर दास जी द्वारा रचित निम्न दोहा इस बात को चरितार्थ करती है–

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

कहे कबीर हरि पाइए मन ही की परतीत।।"
अर्थात– जीवन में जय और पराजय केवल मन के भाव हैं।

गांधी: अनेक तथ्यों के ....

मनीषा साव
लेखापरीक्षक

आज का समय तथ्यों से परे, भ्रमित सूचनाओं के रूप में "पोस्ट-ट्रुथ युग" कहा जाता है। इस संदर्भ में गांधी जी का चिंतन और संघर्ष और भी प्रासंगिक हो उठते हैं। गांधीजी न केवल भारत की स्वतंत्रता के अग्रदूत थे बल्कि सत्य, नैतिकता और सामाजिक न्याय के ऐसे पक्षधर रहे है जिसने अपनी विचारों और आचरण से पूरी मानवता को प्रेरित किया। उन्होनें विभिन्न वर्गों के हितों की रक्षा करने का प्रयास किया, लेकिन उनके विचार और नीतियाँ कई समूहों के लिए असंतोष का कारण बनीं।

वामपंथी आलोचना

कुछ वामपंथी लेखकों ने भी गांधीजी की आलोचना की है:

अरुधिति रॉय ने उन्हे :status quo" कहा। पेरी अंडोरसन ने कहा कि गांधी जी का बौद्धिक विकास कट्टर धार्मिक विश्वासों के कारण रुक गया था। वामपंथी विचारधारा के समर्थकों ने गांधी की "स्वदेशी" और "नमक सत्याग्रह" जैसी नीतियों की आलोचना की। उनका मानना था कि गांधी की नीतियाँ श्रमिक वर्ग के वास्तविक मुद्दों को नहीं उठाती थीं और वे औपनिवेशिक शासन के खिलाफ पर्याप्त संघर्ष नहीं कर रही थीं।

रामचंद्र गुहा की गांधी पर जीवनी "Gandhi :The year that change the world,1914-1948" में गांधी के भारत लौटने से लेकर उनकी हत्या तक का कालखंड शामिल है। गांधी जी ने शुरुआत में ब्रिटिश शासन के प्रति वफादारी दिखाई, लेकिन जालियावाला बाग हत्याकांड (1919) के बाद वे पूरी तरह से स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े।

दलित अधिकारों के लिए संघर्ष: डॉ. भीमराव अंबेडकर की आलोचना

डॉ. भीमराव अंबेडकर, जो भारतीय समाज में दलितों के अधिकारों के प्रबल समर्थक थे, ने गांधी की नीतियों की आलोचना की। उनका मानना था कि गांधी का "हरिजन" शब्द दलितों की वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाता था और उनके लिए पर्याप्त राजनीतिक अधिकार नहीं प्रदान करता था। अंबेडकर ने गांधी की "हिंदू धर्म में सुधार" की कोशिशों को भी अपर्याप्त माना और दलितों के लिए अलग से राजनीतिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता जताई।

हिंदू राष्ट्रवादियों की आलोचना: विनायक दामोदर सावरकर और अन्य

विनायक दामोदर सावरकर और हिंदू महासभा के नेताओं ने गांधी की नीतियों की आलोचना की। उनका आरोप था कि गांधी मुसलमानों के प्रति अत्यधिक सहानुभूति दिखाते थे और हिंदू समाज के हितों की अनदेखी करते थे। सावरकर ने गांधी के "हिंदू-मुस्लिम एकता" के प्रयासों को भी संदिग्ध माना।

अफ्रीका में गांधी की आलोचना

गांधी के दक्षिण अफ्रीका में बिताए गए समय के दौरान, उन्होंने भारतीय समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष किया था 2015 में दक्षिण अफ्रीका में गांधी की प्रतिमा पर हमला किया गया। 2016 में घाना विश्वविद्यालय से गांधीजी की मूर्ति हटाई गयी, उन पर अफ्रीकियो के प्रति नस्लभेद का आरोप लगाया गया। कुछ लोगो ने उन्हे नस्लबंदी करार दिया, जबकि नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे नेता उन्हे आदर्श मानते है। उनके शुरुआती बयानों में अश्वेत लोगों के प्रति नस्लीय भेदभाव की झलक मिलती है, जिससे अफ्रीकी समुदाय में उनकी आलोचना हुई।

गांधी की दृष्टि: सभी समुदायों के लिए समानता

गांधी का उद्देश्य सभी समुदायों के बीच समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना था। उन्होंने "सत्य" और "अहिंसा" के सिद्धांतों को अपनाया और समाज में व्याप्त भेदभाव और असमानताओं के खिलाफ संघर्ष किया। उनका मानना था कि स्वतत्रता केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक भी होनी चाहिए।

महात्मा गांधी की नीतियाँ और दृष्टिकोण विभिन्न समूहों के लिए अलग-अलग अर्थ रखते थे। जबकि कुछ ने उन्हें समाज में समानता और भाईचारे के प्रतीक के रूप में देखा, वहीं अन्य ने उनकी नीतियों में अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं पाई। इन आलोचनाओं के बावजूद, गांधी का योगदान भारतीय समाज में अमिट रहेगा, और उनकी नीतियाँ आज भी सामाजिक न्याय और समानता के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ

श्रेया सिंह
लेखापरीक्षक

21वीं सदी में जब हम प्रगति, समानता और आत्मनिर्भरता की बात करते हैं, तब यह समझना अनिवार्य हो जाता है कि हमारे समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति वास्तव में कैसी है। महिलाएं आज न केवल घर की जिम्मेदारी निभा रही हैं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। फिर भी, उनके सामने संघर्ष आज भी उतने ही वास्तविक हैं जितने दशकों पहले थे – बस उनके स्वरूप बदल गए हैं।

कामकाजी महिला के सामने सबसे पहली चुनौती है – दोहरी भूमिका का संतुलन। एक ओर वह ऑफिस में एक पेशेवर, ज़िम्मेदार कर्मचारी है, तो दूसरी ओर घर में माँ, बहू, पत्नी, बहन या बेटी की भूमिका में भी उससे पूर्णता की अपेक्षा रखी जाती है। यह अपेक्षा अक्सर इस हद तक बढ़ जाती है कि उसकी थकावट, मानसिक तनाव और व्यक्तिगत इच्छाएँ नजरंदाज हो जाती हैं। समाज आज भी महिला को "सुपरवुमन" बनाना चाहता है, जबकि असल में उसे इंसान की तरह समझने की जरूरत है।

बाहरी दुनिया में महिला के लिए दिखने वाली समानता के पीछे एक कड़वा सच यह है कि अधिकांश कार्यस्थलों पर महिलाएं अब भी "अदृश्य दीवारों" से जूझ रही हैं जैसे लिंग आधारित वेतन अंतर, नेतृत्व जिम्मेदारियों मे महिलाओं की सीमित भागीदारी, मातृत्व को एक "करियर ब्रेक" के रूप में देखा जाना, और सबसे गंभीर – कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, जो अब भी महिलाएं झेल रही हैं, भले ही कई कंपनियाँ इसके लिए आंतरिक शिकायत समितियाँ बना चुकी हैं।

इन सबके बीच सबसे दुखद यह है कि कई बार महिलाओं को अपनी उपस्थिति साबित करने के लिए पुरुषों से दोगुना मेहनत करनी पड़ती है।

जब कोई पुरुष काम के बाद घर आकर थक जाता है, तो उसे "आराम करने दो" कहा जाता है। लेकिन जब कोई महिला ऑफिस से थक कर लौटती है, तो उससे अपेक्षा होती है कि वह घर भी "सही" संभाले। यही सामाजिक मानसिकता महिलाओं के लिए सबसे बड़ी बाधा बन जाती है।

हमने भले ही आधुनिकता के कपड़े पहन लिए हों, लेकिन सोच अब भी परंपरावादी है — "कामकाजी महिला तो परिवार पर ध्यान नहीं दे पाएगी" जैसी धारणाएँ आज भी घर–घर में सुनाई देती हैं।

शायद सबसे गहरी और कम दिखाई देने वाली चुनौती है – महिला का आंतरिक संघर्ष। एक ओर वह अपने सपनों को उड़ान देना चाहती है, तो दूसरी ओर सामाजिक ढांचे में "अच्छी बहू", "अद्भुत पत्नी" और "ज़िम्मेदार माँ" बनने के बोझ को भी ढोती है। यह अंतर्द्वंद उसकी आत्म–छवि को कमजोर कर देती है जिससे उसके आत्मसम्मान को भी ठेस पहुँचती है।

यह समस्या इतना गंभीर रूप ले रही है कि मात्र कानून बनाना ही इसका समाधान नहीं है, अपितु आवश्यकता है सोच में परिवर्तन लाने की, समान कार्य के लिए समान वेतन सुनिश्चित करने की, लचीले कार्य समय और वर्क फ्रॉम होम जैसे विकल्पों को सहज रूप से अपनाने की, पितृसत्ता आधारित सोच को चुनौती देने की और सबसे अहम – घर के पुरुष सदस्यों की भागीदारी की, ताकि घर की ज़िम्मेदारी केवल महिला की न हो।

कामकाजी महिलाएं समाज की रीढ़ हैं, जो बिना किसी शोर के परिवार और देश की प्रगति में योगदान दे रही हैं। लेकिन जब तक उनके संघर्ष को सिर्फ "महिला होने का भाग्य" कहकर नज़रअंदाज़ किया जाएगा, तब तक कितनी भी प्रगति अधूरी रहेगी। हमें यह समझना होगा कि कामकाजी महिला कोई विशेष श्रेणी नहीं, बल्कि एक सामान्य नागरिक है, जो अपने हक और सम्मान की हकदार है। सच्चा विकास तभी होगा जब हम उसे सिर्फ सहकर्मी या परिवार की सदस्य नहीं, बल्कि एक पूर्ण, स्वतंत्र और समर्थ इंसान की तरह देखा जाएगा।

रामबोला से मानस का हंस तक का सफर

रमेश झा
सहायक निदेशक (रा.भा.)

रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के महान कवि हैं। वे अलौकिक कवित्व शक्ति संपन्न थे। उन्होंने सगुण राम भक्ति की एक अविरल धारा बहाई। इस धारा में आज भी लोग आप्लावित हैं। उन्होंने जन सामान्य लोगों के लिए सगुण राम की भक्ति को उजागर किया। वे लिखते हैं–

राम ब्रह्म परमारथ रुपा। अविगत अलख अनादि अनूपा।

(राम ही परमब्रह्म है, वे अविगत (जो बीता न हो, जिसके बारे में कुछ कहा न जा सके, जिसका कोई आरंभ ही न हो, जो अनुपम हो।)

रामकथा पर संस्कृत में अनेक ग्रंथ लिखे गये। महर्षि वाल्मिकी रचित रामायण, भवभूति रचित उत्तररामचरितं आदि अनेकों ग्रंथ उपलब्ध हैं, पर बाबा तुलसी ने जनभाषा में रामचरित रचकर सामान्य लोगों को राम के नजदीक ला दिया। उत्तर भारत से जब मजदूर मारीशस गये तो अपने साथ तुलसीकृत रामचरित मानस ले गये। हिंदी के अखिल भारतीय सम्मेलन में एक विद्वान ने बड़ी रोचक बात बताई। मारीशस में एक लड़के और लड़की की शादी होनी थी। शादी कराने वाले पंडित वहाँ नहीं थे। अब शादी कैसे हो, सभी इसी उधेड़बुन में थे। एक बुजुर्ग को इसकी जिम्मेदारी दी गई। आप ही कोई उपाय निकालो। उसने एक उपाय दिया। रामचरितमानस के सीता स्वयंवर का पाठ कर शादी की जाए। सीता स्वयंवर का पाठ कर शादी कराई। शादी में कोई व्यवधान नहीं आया। आज भी लोगों को जब कोई समाधान नहीं सूझता तो तुलसीकृत सुंदरकांड का पाठ करते हैं।

अधिकांश विद्वान तुलसीदास का जन्मस्थान राजापुर को मानने के पक्ष में हैं। राजापुर उत्तरप्रदेश के चित्रकूट जिला के अंतर्गत स्थित एक गाँव है। वहाँ आत्माराम दूबे नामक एक प्रतिष्ठित सरयुपारीण ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम हुलसी था। संवत 1554 के श्रावण मासके शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को अभुक्त मूल नक्षत्र में तुलसीदास जी का जन्म हुआ था। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार शिशु बारह महीने तक माँ के गर्भ में रहने के कारण अत्यधिक हृष्ट–पूष्ट था और उसके मुँह में दाँत दिखाई दे रहे थे। जन्म लेने के साथ ही उसने राम नाम का उच्चारण किया जिससे उसका नाम रामबोला पड़ गया। पिता ने किसी अनिष्ट से बचने के लिए बालक को चुनियाँ नाम की एक दासी को सौंप दिया और खुद विरक्त हो गए। जब रामबोला साढ़े पाँच साल का हुआ तो चुनियाँ भी नही रही। वह गली–गली अनाथों की तरह जीवन जीने को विवश हो गया।

भगवान शंकर की प्रेरणा से रामशैल पर रहने वाले श्री नरहरि ने रामबोला के नाम से चर्चित हो चुके इस बालक को ढूंढ निकाला और विधिवत उसका नाम तुलसीदास रखा। उन्हें कई लोगों द्वारा संस्कृत के महाकवि वाल्मीकि का अवतार माना जाता है। हिंदू

धर्मग्रंथ भविष्योत्तर पुराण में, भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती को बताते हैं कि कैसे वाल्मीकि, जिन्हें हनुमान से राम की महिमा को स्थानीय भाषा में गाने का वरदान मिला था, भविष्य में कलयुग (चार युगों के चक्र के भीतर वर्तमान और अंतिम युग या युग) में अवतार लेंगे।

वाल्मीकिस्तुलसीदासः कलौ देवि भविष्यति।
रामचन्द्रकथामेतां भाषाबद्धां करिष्यति।।

इसके उपरांत संवत 1569 माघ शुक्ल पंचमी को उसका यज्ञोपवीत संस्कार कराया। संस्कार के समय भी बिना सिखाये ही बालक रामबोला ने गायत्री मंत्र का स्पष्ट उच्चारण किया, जिसे देख सभी चकित हो गए। इसके बाद नरहरि बाबा ने वैष्णवों के पाँच संस्कार करके बालक को राम मंत्र की दीक्षा दी और अयोध्या में ही रहकर विद्याध्यन कराया।

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, संवत 1583 को राजापुर से थोड़ी ही दूर यमुना के पार स्थित एक गांव की अति सुंदरी कन्या रत्नावली के साथ उनका विवाह हुआ। अतः कुछ समय के लिए वे काशी चले गए और वहाँ शेष सनातन जी के साथ रहकर वेद–वेदांग के अध्ययन में जुट गए। एक दिन पत्नी की याद में व्याकुल तुलसीदास भयंकर अंधेरी रात में उफनती यमुना नदी को तैरकर अपनी पत्नी के पास पहुँचे और उसी समय घर चलने के लिए कहा। इस अप्रत्याशित जिद से खीझकर रत्नावली ने एक दोहे के माध्यम से शिक्षा दी उसने ही तुलसीराम को तुलसीदास बना दिया। दोहा इस प्रकार है–

अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति।
नेकु जो होती राम से, तो काहे भव भीता।

("यदि इस शरीर (जो हड्डियों और मांस से बना है) के प्रति जितनी आसक्ति है, उतनी ही आसक्ति यदि राम से होती तो फिर इस संसार से डरने की कोई बात नहीं होती।")

यह दोहा सुनते ही उन्होंने अपनी पत्नी को उसके पिता के घर छोड़कर अपने गाँव आ गए। कुछ काल राजापुर रहने के बाद वे पुनः काशी आ गए और वहाँ राम कथा सुनाने लगे। वहाँ उनकी मुलाकात रामभक्त हनुमान जी से हुई। तुलसी ने श्री रघुनाथ जी से दर्शन करवाने की प्रार्थना की। चित्रकुट के रामघाट पर उन्हे श्रीराम जी के दर्शन प्राप्त हुए। तुलसीदास भगवान श्रीराम के दर्शन पाकर अभिभूत हो गए।

तुलसीदास जी प्रयाग से पुनः काशी आ गए और प्रहलाद घाट में निवास किया। संवत् 1631 का प्रारंभ हुआ।

तुलसीदास राम भक्ति शाखा के सर्वोच्च कवि हैं। उन्होंने भगवान राम को अपना इष्टदेव माना है। तुलसी का भक्ति मार्ग वेद शास्त्र पर आधारित है। कवि के रुप में उन्होंने अपने साहित्य में श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन और आत्मनिवेदन इस सभी पक्षों का प्रतिपादन बड़े ही कुशलतापूर्वक किया है। वस्तुतः तुलसीदास जी एक उच्च कोटि के कवि और भक्त हैं तथा उनका हृदय भक्ति के पवित्रतम

भावों से परिपूर्ण हैं। वे राम के अनन्य भक्त हैं। उन्हें केवल राम पर ही विश्वास है। उन्होंने चातक को अपनी भक्ति का परम आदर्श माना है। तुलसीदास जी का विचार है कि वाक्य ज्ञान की अपेक्षा तत्व ज्ञान से भक्ति की प्राप्ति संभव है। चातक की निष्कामता द्वारा उन्होंने अपने भक्ति रूप को व्यक्त किया है–

'जन कहाय नाम लेत हों, किये पन चातक ज्यां प्यास प्रेम पन की।'

तुलसी की भक्ति दास्य भाव की है। उन्होंने स्वयं को श्रीराम का दास माना है। उन्होंने श्रीराम के समक्ष स्वयं को दीन, लघु, अधम, विनम्र और महापतित माना है।

हृदय का पवित्रतम भाव है भक्ति। यह भक्ति भाव सर्वप्रथम श्रद्धा के रूप में अंकुरित होती है। यह श्रद्धा तीन प्रकार की होती है– सात्विकी, राजसी, और तामसी। श्रद्धा के इन तीन रूपों के आधार पर भक्ति की भी तीन कोटियाँ होती हैं–

1.सात्विकी भक्ति

2.राजसी भक्ति

3.तामसी भक्ति

विनय पत्रिका और रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने भक्ति रूपों की विशद चर्चा की है। रावण राजसी और तामसी भक्ति का उपासक था, जबकि गोस्वामी तुलसीदास जी सात्विकी भक्ति प्रिय थी। सात्विकी भक्ति मिल जाए यही उनकी कामना है–

चहों न सुगति सुमति सम्पत्ति, ऋद्धि सिद्धि विपुल बड़ाई।

हेतु रहित अनुराम राम पद, अनुदिन बढ़ै अधिकाई।

नवधा भक्ति का निरुपण तुलसीदास जी ने रामचरित मानस और विनयपत्रिका दोनों ही ग्रंथों में किया है।

रामचरित मानस के शबरी–प्रसंग में नवधा भक्ति का निरुपण इस प्रकार किया है।

'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।

भावार्थ:– मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर। पहली भक्ति है संतों का सत्संग। दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम।

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमाना।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गाना।

भावार्थ:– तीसरी भक्ति है अभिमान रहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करें।

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा।।

छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।

(मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास– यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना।)

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा।।

आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा।

(सातवीं भक्ति है जगत् को समभाव से मुझमें ओतप्रोत (राममय) देखना और संतों को मुझसे भी अधिक मानना। आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाए, उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराए दोषों को न देखना।)

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।

नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।

(नवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विषाद) का न होना। इन नवों में से जिनके एक भी होती है, वह स्त्री–पुरुष, जड़–चेतन कोई भी हो)

गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीराम के अनन्य उपासक हैं। परंतु उन्होंने किसी अन्य देवी–देवता की निन्दा नहीं की है। किन्तु राम को ही सर्वोपरि मानकर उन्हीं के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किया है।

तुलसीदास जी की भक्ति की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना निम्नानुसार की जा सकती है–

तुलसी के इष्टदेव मर्यादापुरुषोत्तम राम है। उन्होंने अपने आराध्य के प्रति भक्ति भावना के प्रसुन अर्पित करते समय उन्हें अपना स्वामी और स्वयं को सेवक माना है। उनका विश्वास है कि बिना इसके संसार सागर से उद्धार नहीं हो सकता है। इसलिए उनका मत है कि – 'सेवक–सेव्य भाव बिन भव न तरिय दुखारी।' अतः स्पष्ट है कि तुलसी की भक्ति सेवक–सेव्य भाव की अर्थात् दास्य भाव की है।

तुलसी राम के अनन्य भक्त हैं। तुलसी की भक्ति में श्रद्धा और विश्वास का अद्भूत समन्वय है–

'राम से बड़ो है कौन, मोंसों कौन छोटो।

राम सौं खरौ है कौन, मोंसो कौन खोटो।'

तुलसी ने अपने इष्टदेव के स्वरुप का वर्णन करते हुए उन्हें निर्गुण और सगुण , निराकार एवं साकार दोनों स्वरुपों में स्वीकार किया है। तुलसी ने राम जी को "**विश्वरुप रघुवंश मनि**" विराट रुपधारी बताया है। वस्तुतः तुलसी के राम के अनंत गुण विभूषित हैं।

"नट इव कपट चरित करि नाना।

सदा स्वतंत्र राम भगवाना॥"

तुलसी ने भक्ति प्राप्ति के लिए सत्संग को सर्वश्रेष्ठ बताया है। इसके अतिरिक्त ज्ञान और वैराग्य को भक्ति का साधन बताया है। तुलसी ने तप, संयम, श्रद्धा, विश्वास प्रेम, ईश्वर कृपा, प्रभु की शरणागति को भी भक्ति का प्रमुख साधन सिद्ध किया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने को सर्वस्वरुपेण इष्टदेव श्रीराम के चरणों में अर्पित कर दिया है। भक्त का विश्वास है कि इष्टदेव मुझे चाहे जिस रुप में अपनाये मेरा तो सर्वभावेन हित ही हैः–

ब्रह्म तू हों जीव, तू ठाकुर हों चेरो।
तात, मात गुरु सखा, तू सब विधि हितू मेरो॥

तुलसी ने भक्ति को सरल और व्यवहारिक रुप में अपने काव्य में प्रस्तुत किया है। '**केशव कहि न जाये का कहिये।**' वाले पद में कवि ने दार्शनिक मतों के संबंध में जिज्ञासा प्रकट की है, अन्त में सभी मतों को मन को भ्रमित करने वाला निरूपित किया है।

"तुलसीदास परिहै तीनि भ्रम, जो आपन पहिचानै।
तुलसीदास प्रभु यही पथ रहि अविचल हरि–भक्ति लाहाँगो॥"

सच्ची भक्ति की प्रमुख विशेषता है–निष्कामता। निष्काम भाव में जो भक्ति की जाती है, वही सर्वश्रेष्ठ है। तुलसी की भक्ति इसी प्रकार की थी। वे राम को इसलिए भजते थे कि राम इसे प्रिय है।

विदेशी आक्रांताओं से त्रस्त तत्कालीन समाज को उन्होंने एक मार्ग दिखाया और समाज को एक सरल भक्ति मार्ग दिखाया।

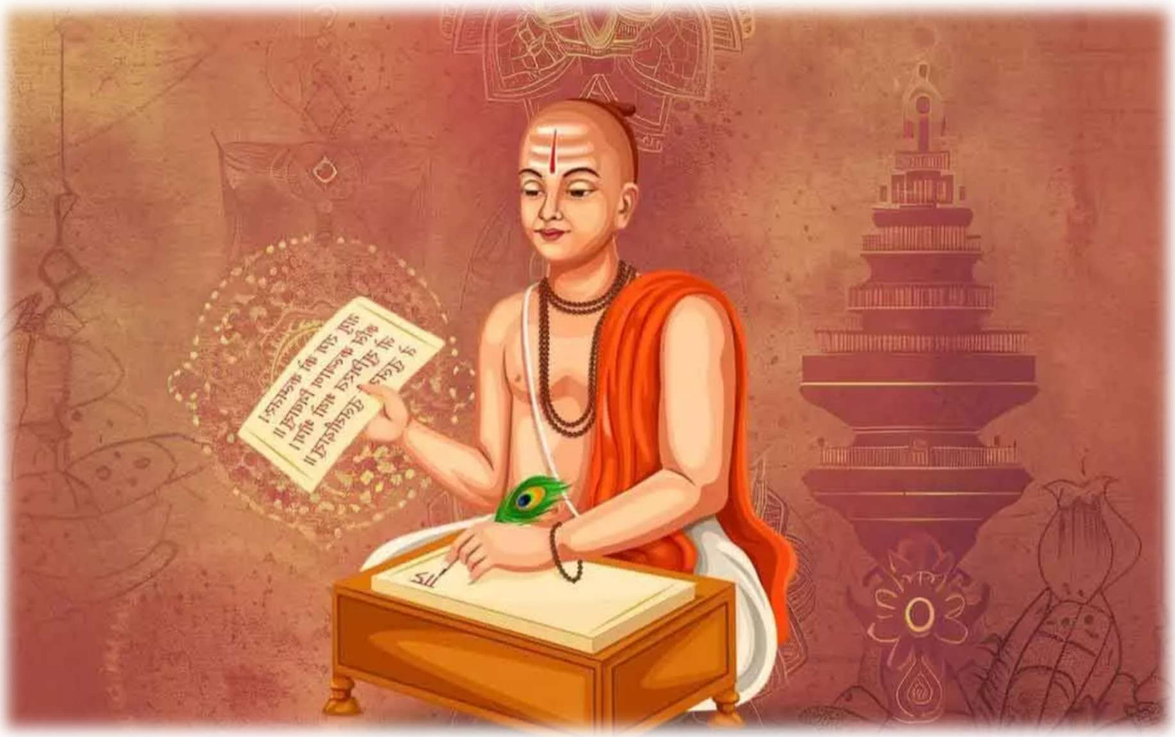

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

नन्दनी साव
कनिष्ठ अनुवादक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कंप्यूटर विज्ञान का वह क्षेत्र है जो आमतौर पर मानव बुद्धि से जुड़ी संज्ञानात्मक समस्याओं को हल करने के लिए समर्पित है, जैसे कि सीखना, निर्माण और छवि पहचान। आधुनिक संगठन स्मार्ट सेंसर, मानव–निर्मित सामग्री, निगरानी उपकरण और सिस्टम लॉग जैसे विविध स्रोतों से बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करते हैं। AI का लक्ष्य स्व–शिक्षण प्रणाली बनाना है जो डेटा से अर्थ प्राप्त करती है। फिर, AI उस ज्ञान को मानव–समान तरीकों से नई समस्याओं को हल करने के लिए लागू कर सकता है। उदाहरण के लिए, AI तकनीक मानवीय बातचीत का सार्थक रूप से जवाब दे सकती है, मूल चित्र और पाठ बना सकती है और वास्तविक समय के डेटा इनपुट के आधार पर निर्णय ले सकती है।

विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अनुप्रयोग:

स्वास्थ्य देखभाल: इसका उद्देश्य उपचार की सटीकता को बढ़ाना, व्यक्तिगत उपचार को सक्षम बनाना, रोगी के परिणामों में सुधार करना, स्वास्थ्य देखभाल को सुव्यवस्थित करना तथा चिकित्सा अनुसंधान एवं नवाचार में तेज़ी लाना है।

हाल ही में इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) ने "जैव चिकित्सा अनुसंधान और स्वास्थ्य देखभाल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में नैतिक आचरण सुनिश्चित करने हेतु दिशा–निर्देश" जारी किये, जो स्वास्थ्य क्षेत्र में नैतिक आचरण सुनिश्चित करने हेतु 10 प्रमुख रोगी–केंद्रित नैतिक सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करता है।

व्यापार: व्यापार क्षेत्र में AI संचालन को अनुकूलित करने, निर्णय लेने , दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने, ग्राहक सेवा में सुधार करने, व्यक्तिगत विपणन को सक्षम बनाने, अंतर्दृष्टि के लिये बिग डेटा का विश्लेषण करने तथा धोखाधड़ी और साइबर सुरक्षा खतरों का पता लगाने, आपूर्ति शृंखला प्रबंधन को कारगर बनाने, नवाचार एवं प्रतिस्पर्द्धा में मदद करता है।

शिक्षा: AI विभिन्न क्षेत्रों में लर्निंग या सीखने की क्षमताओं को पूरा करने हेतु नवीन और व्यक्तिगत दृष्टिकोणों के लिये नई संभावनाओं को तलाश सकता है।

आईआईटी खड़गपुर ने नेशनल AI रिसोर्स प्लेटफॉर्म (NAIRP) विकसित करने के लिये अमेज़ॅन वेब सर्विसेज़ के साथ सहयोग स्थापित किया है। यह भविष्य में बेहतर टीचिंग और लर्निंग के लिये आँखों की गति, संकेत और अन्य मापदंडों की निगरानी जैसे तंत्रों का उपयोग करेगा।

जैसा कि ChatGPT, Bard और अन्य बड़े भाषा मॉडल द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जनरेटिव AI शिक्षकों की मदद कर सकता है और छात्रों को नवाचार में मदद कर सकता है।

न्यायपालिका: इसका उपयोग कानूनी अनुसंधान और विश्लेषण में सुधार, दस्तावेज़ीकरण व केस प्रबंधन को स्वचालित करने, न्यायिक प्रक्रियाओं और निर्धारित समय को बढ़ाने, ऑनलाइन विवाद समाधान की सुविधा प्रदान करने, पूर्वानुमानित विश्लेषण के माध्यम से कानूनी निर्णय लेने में सहायता करने और आभासी रूप से कानूनी सहायता प्रदान करके न्याय तक पहुँच प्रदान करने के लिये किया जा सकता है।

SUVAS (सुप्रीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर): यह एक AI प्रणाली है, जो क्षेत्रीय भाषाओं में निर्णयों के अनुवाद में सहायता प्रदान कर सकती है। न्याय तक पहुँच सुनिश्चित करने की दिशा में यह एक और ऐतिहासिक प्रयास है। SUPACE (सुप्रीम कोर्ट पोर्टल फॉर असिस्टेंस इन कोर्ट एफिशिएंसी): हाल ही में इसे भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लॉन्च किया गया था।

साइबर सुरक्षा/सुरक्षा: इसका उपयोग सुरक्षा और साइबर सुरक्षा में साइबर खतरों का पता लगाने और उन्हें रोकने, विषम गतिविधियों की पहचान करने, प्रारूप एवं कमज़ोरियों के लिये बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने, नेटवर्क तथा समापन बिंदु सुरक्षा को बढ़ाने, खतरे की प्रतिक्रिया एवं घटना प्रबंधन को स्वचालित करने, प्रमाणीकरण व अभिगम नियंत्रण को मज़बूत करने के लिये किया जाता है। यह साइबर हमलों के खिलाफ सक्रिय रूप से रक्षा हेतु रीयल-टाइम थ्रेट इंटेलिजेंस एंड प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स प्रदान करता है।

AI के लाभ:

सटीकता: AI एल्गोरिदम सटीकता के साथ बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकता है, त्रुटियों को कम कर सकता है और विभिन्न अनुप्रयोगों जैसे- उपचार, पूर्वानुमान और निर्णय लेने के दौरान सटीकता में सुधार कर सकता है।

बेहतर निर्णय लेने की क्षमता: AI डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि और विश्लेषण प्रदान करता है, निहित प्रारूप, प्रवृत्तियों और संभावित जोखिमों की पहचान करके निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है जो मनुष्यों द्वारा आसानी से पहचानी नहीं जा सकती हैं।

नवाचार में वृद्धि: AI नई खोजों को सक्षम कर स्वास्थ्य सेवा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देता है।

उत्पादकता में वृद्धि: AI उपकरण और प्रणालियाँ मानव क्षमताओं में वृद्धि कर सकती हैं, जिससे विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि हो सकती है।

निरंतर सीखने की क्षमता और अनुकूलता: AI प्रणाली नए डेटा और अनुभवों से सीख सकती है, लगातार अपनी क्षमता में सुधार कर सकती है, परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित कर सकती है, साथ ही बदलते रुझानों तथा प्रारूप के साथ अद्यतित रह सकती है।

अन्वेषण और अंतरिक्ष अनुसंधान: AI अंतरिक्ष अन्वेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, स्वायत्त अंतरिक्ष यान, रोबोट अन्वेषण और दूरस्थ एवं

खतरनाक वातावरण में डेटा विश्लेषण को सक्षम बनाता है।

AI के नुकसान:

नौकरी विस्थापन: AI स्वचालन से कुछ नौकरियों का विस्थापन हो सकता है क्योंकि मशीनें और एल्गोरिदम ऐसे कार्य कर सकते हैं जो पहले मनुष्यों द्वारा किये जाते थे। इसका परिणाम बेरोज़गारी हो सकती है।

नैतिक चिंताएँ: AI से नैतिक चिंताएँ प्रभावित होती हैं जैसे कि एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह की संभावना और स्वायत्त निर्णय लेने वाली प्रणालियों के नैतिक निहितार्थ आदि।

डेटा उपलब्धता और गुणवत्ता पर निर्भरता: AI सिस्टम डेटा उपलब्धता और गुणवत्ता पर बहुत अधिक निर्भर करता है। पक्षपातपूर्ण या अपूर्ण डेटा गलत परिणाम दे सकता है या निर्णय लेने में मौजूदा पक्षपात को मज़बूती प्रदान कर सकता है।

सुरक्षा जोखिम: AI सिस्टम साइबर हमलों और शोषण के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं। दुर्भावनापूर्ण AI एल्गोरिदम में हेर–फेर किया जा सकता है या सुरक्षा जोखिम पैदा करते हुए नापाक उद्देश्यों के लिये AI–संचालित उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

अति–निर्भरता: उचित मानवीय निरीक्षण या आलोचनात्मक मूल्यांकन के बिना AI पर आँख बंद करके भरोसा करने से त्रुटियाँ या गलत निर्णय हो सकते हैं, खासकर अगर AI सिस्टम अपरिचित या अप्रत्याशित स्थितियों का सामना करता है।

पारदर्शिता की कमी: कुछ AI मॉडल, जैसे कि डीप लर्निंग न्यूरल नेटवर्क, की व्याख्या करना मुश्किल हो सकता है, जिससे उनके निर्णयों या पूर्वानुमानों के पीछे के तर्क को समझना चुनौतीपूर्ण हो जाता है (जिसे "ब्लैक बॉक्स" समस्या कहा जाता है)।

प्रारंभिक निवेश और रखरखाव लागत: AI सिस्टम का प्रबंधन करने के लिये अक्सर बुनियादी ढाँचे, डेटा संग्रह और मॉडल विकास में महत्त्वपूर्ण अग्रिम निवेश की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त AI सिस्टम को बनाए रखना और अपडेट करना महँगा हो सकता है।

निष्कर्ष:

AI में मानव बुद्धि से परे जाने की पूरी क्षमता है और यह किसी भी विशेष कार्य को सटीक और कुशलता से कर सकता है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि AI में अपार क्षमता है। हालाँकि किसी भी चीज़ पर अधिक निर्भरता अच्छी नहीं होती है और कुछ भी पूर्ण रूप से मानव मस्तिष्क के समान नहीं हो सकता है।

इसलिये AI का अत्यधिक उपयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि बहुत अधिक स्वचालन और मशीनों पर निर्भरता, वर्तमान मानव जाति और आने वाली पीढ़ियों के लिये खतरनाक साबित हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन और युवा पीढ़ी की भूमिका– धरती के कल की कहानी

विक्रमादित्य
लेखापरीक्षक

एक शाम मैं अपने गाँव के पास नदी के किनारे बैठा था। कुछ साल पहले यह नदी बरसात के बाद पूरे उफान पे होती थी, पर इस बरसात पानी आधा भी नहीं है। गाँव के बुजुर्ग भी कहते है "मौसम अब पहले जैसा नहीं रहा है बेटा, सब बदल गया है।" यही बदलाव जलवायु परिवर्तन के रूप में अब हम सबकी जिंदगी में दस्तक दे चुका है।

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य है पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में दीर्घकालिक परिवर्तन। इसमें तापमान में वृद्धि, वर्षा के चक्र में बदलाव, समुद्र–स्तर का बढ़ना और अत्यधिक प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़, सूखा, तूफान, भूकंप आदि शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रमुख प्रभाव हैं:–

- 🌡️ **औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि:** मानव जनित गतिविधियों के कारण वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों (विशेषकर कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड) की मात्रा लगातार बढ़ रही है। इससे पृथ्वी की सतह पर गर्मी फँस जाती है और औसत तापमान में वृद्धि होती है। इससे ध्रुवों की बर्फ तेजी से पिघल रही है। 20वीं सदी की तुलना में आज पृथ्वी का औसत तापमान लगभग 1.1°C बढ़ चुका है। इसका असर मानव स्वास्थ्य, कृषि और पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ रहा है।
- 🌊 **समुद्र स्तर में वृद्धि:** जैसे–जैसे बर्फ की चट्टानें (ग्लेशियर्स) और ध्रुवीय बर्फ पिघलती हैं, वैसे–वैसे समुद्र का जलस्तर बढ़ता है। इससे तटीय शहरों को डूबने का खतरा है। भारत जैसे देशों में मुंबई, कोलकाता, चेन्नई जैसे शहर खतरे में हैं। तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों को जलवायु शरणार्थी बनकर पलायन करना पड़ सकता है।
- 🌧️ **मौसम चक्र में असंतुलन:** जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम चक्र अनियमित हो गया है। कुछ स्थानों पर अत्यधिक वर्षा, तो कहीं भयंकर सूखा। मानसून समय पर नहीं आता, जिससे कृषि पर बुरा असर पड़ता है। चक्रवात, तूफान और बर्फबारी जैसी घटनाएँ बार– बार और अधिक तीव्र हो रही हैं।
- 🌾 **कृषि और खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव:** बढ़ते तापमान और अनियमित वर्षा के कारण फसलों की पैदावार कम हो रही है। मिट्टी की नमी और उर्वरता में कमी आ रही है। कीट और बीमारियाँ बढ़ रही हैं। इससे भोजन की कीमतें बढ़ती है और गरीब वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित होता है।
- 🌿 **जैव विविधता पर संकट:** जलवायु परिवर्तन के कारण कई जीव–जन्तुओं और पौधों की प्राकृतिक आवास प्रणाली नष्ट हो रही है। कई प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं या

प्रवास कर रही हैं। उदाहरणः ध्रुवीय भालू, कोरल रीफ (प्रवाल भित्तियाँ), हिमालयी पक्षियाँ आदि संकट में हैं।

भारत भी इन प्रभावों से अछूता नहीं है। हाल ही में उत्तराखंड के धाराली में हुई भीषण आपदा – जिसे अक्सर बादल फटना भी कहा जाता है, एक उदाहरण है कि कैसे जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक आपदाओं को बढ़ा सकता है।

जलवायु परिवर्तन केवल कार्बन उत्सर्जन, ग्लोबल वार्मिंग या वनों की कटाई का नतीजा नहीं है, अपितु यह हमारे अंदर की लालसा, अतृप्तता और असंतोष का भी प्रतिबिंब है। जब मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करता है, तब वह अपना आंतरिक संतुलन खो देता है। प्रकृति हमारा विस्तार है और जैसा व्यवहार हम इसके साथ करते है, वैसा ही परिणाम हमें वापस मिलता है।

भारत जैसे देश में युवाओं की संख्या 65% से अधिक है। यदि यह विशाल वर्ग पर्यावरण के प्रति सचेत हो जाए, तो एक राष्ट्र ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया बदल सकती है। आज के युवा सोशल मीडिया, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों का इस्तेमाल कर नवाचारों और जागरूकता फैलाने में सक्षम हैं। युवा आंदोलनकर्ताओं जैसे ग्रेटा थनबर्ग और फ्राइडे फॉर फ्युचर ने जलवायु न्याय की दिशा में वैश्विक चेतना जगाई है। भारत में भी आचार्य प्रशांत जैसे विचारकों ने ऑपरेशन 2030 के माध्यम से युवाओं में आत्मचिंतन और सक्रियता का आवाहन किया है।

युवा इन बातों से शुरुआत कर सकते हैं:

- आज का उपभोक्तावादी जीवन पर्यावरण पर भारी दबाव डालता है। अनावश्यक उपयोग जैसे फास्ट फैशन, बार–बार मोबाइल फोन बदलना और प्लास्टिक उत्पादों का अत्यधिक उपयोग से परहेज कर पर्यावरण की रक्षा में योगदान दिया जा सकता है।
- विद्यालय, कॉलेज आदि संस्थाओं में कार्यशाला के माध्यम से स्थानीय भाषा में जानकारी साझा करके व्यापक जागरूकता एवं बदलाव की नींव रखी जा सकती है।
- युवाओं को चाहिए कि वे सामाजिक अभियानों में भाग ले, ऑनलाइन माध्यमों के साथ साथ जमीनी स्तर पर भी सक्रिय हों– जैसे वृक्षारोपण, जागरूकता रैलियाँ, नीति–निर्माताओं से संवाद आदि । युवा वर्ग ऐसी परियोजना, स्टार्ट अप आदि की शुरुआत कर सकते हैं जो सौर ऊर्जा, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण या जैविक उत्पादों से जुड़े हों।

युवाओं के पास ऊर्जा है, दृष्टि है, साहस है – यह उन्हें जलवायु संकट से निपटने में सबसे सक्षम बनाता है। लेकिन यह ऊर्जा तभी सार्थक हो जाएगी जब वह जागरूकता, संयम और समर्पण से जुड़ी हो। जलवायु परिवर्तन को केवल तकनीक या नीति से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी हल करना होगा।

"जब युवा जागरूक होगा, तभी धरती बचेगी" – अब समय है कि युवा वर्ग खुद में और समाज में परिवर्तन लाकर, एक हरित और न्यायपूर्ण भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ ।

बुरे सोच का बुरा नतीजा

पीजूष कान्ति नस्कर
लिपिक/टंकक

एक गाँव में दो दोस्त रहते थे। एक दोस्त सब्जी बेचने का काम करता था और दूसरा मिट्टी के बर्तन बनाने वाला कुम्हार था। सब्जी वाला बहुत नेक और अच्छे मन का व्यक्ति था जबकि कुम्हार का मन और स्वभाव ठीक नहीं था। जब कभी सब्जी वाले को ज्यादा मुनाफा मिलता तो कुम्हार मन ही मन जल भुन जाता था। एक बार दोनों दोस्तों ने यह फैसला किया वे एक ऊँट खरीद लेते हैं ताकि उसपर बैठकर दोनों शहर के बाजार में अपना–अपना माल बेच सके। दोनों ने मिलकर एक ऊँट खरीद लिया और अगले दिन उसपर बैठकर अपना–अपना माल बेचने निकले। सब्जी वाला अपनी सब्जियों का टोकरा लेकर आगे बैठ गया और कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तनों को ऊँट के एक तरफ लटका कर पीछे बैठ गया।

ऊँट धीरे–धीरे शहर की तरफ़ बढ़ने लगा। आधे रास्ते तक पहुँचते–पहुँचते ऊँट को भूख लगी , उसे तरह तरह की सब्जियों की खुशबू आ रही थी। उसने अपनी गर्दन घुमाई और सब्जी की टोकरी में से सब्जियां खाने लगा। सब्जी वाले ने अपना नुकसान होते हुए देखा लेकिन भूखे ऊँट को उसने कुछ नहीं कहा। उधर कुम्हार ने जब देखा कि ऊँट सब्जियां खा रहा है तो मन ही मन यह सोचकर बहुत खुश हुआ कि सब्जी वाले का काफी नुकसान हो गया। ऊँट ने थोड़ी सब्जी खाई और वापस चलने लगा। कुम्हार हिसाब लगाने लगा कि आज जब वो अपने मिट्टी के बर्तन बेचेगा तो उसकी खूब कमाई होगी जबकि सब्जी वाले की कमाई कम होगी। खुशी से वह फूला नहीं समा रहा था जबकि सब्जी वाला उदास बैठा था।

आखिर शहर की मंडी में पहुंचकर ऊँट को रोका गया। ऊँट धीरे से रुका और ज़मीन पर बैठकर अपने पीठ पर सवार मालिकों के उतरने का इंतज़ार करने लगा। जैसे ही दोनों दोस्त नीचे उतरे तो ऊंट ने एक जोरदार करवट ली और उसकी पीठ के एक तरफ लटके सारे मिट्टी के बर्तन भड़भड़ाकर टूट गए। कुम्हार की आँखे फ़टी की फटी रह गई। उसका एक भी बर्तन साबुत नहीं बचा था। उधर सब्जी वाले की टोकरी में अभी भी काफी सब्जियां बची रह गई थी।

नेक सब्जी वाले ने अपनी सब्जियों को अच्छे दामों पर बेच दिया और दोनों वापस ऊँट की पीठ पर सवार होकर गाँव लौट आये। कुम्हार की उदासी देखकर सब्जी वाले ने अपनी कमाई में से आधा उसे देते हुए कहा, "दोस्त, उदास क्यों होते हो, देखना कल तुम्हें अच्छा मुनाफा मिलेगा। हम मिट्टी के बर्तनों को कल सम्भाल कर ले जाएंगे।" अपने दोस्त की नेकदिली देख कर कुम्हार को अपनी सोच पर बहुत पछतावा हुआ।

इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि हमें कभी किसी दूसरे के लिए बुरा नहीं सोचना चाहिए वरना अपना ही बुरा होता।

वर्ष 2025 की कार्यालयीन गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा

विभाग अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट का आयोजन

कार्यालय में स्वास्थ्य एवं नेत्र निरीक्षण शिविर का आयोजन

कार्यालय में महिला दिवस 2025 का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा 2024 की कुछ झलकियाँ